www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853114
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13 विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 19 रोहतक, 14 अक्तूबर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

महर्षि दयानन्द विनोदप्रिय भी थे

❑ खुशहालचन्द आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

महर्षि दयानन्द इतने बड़े त्यागी, तपस्वी, संन्यासी होकर केवल गंभीर ही नहीं थे, बल्कि सभी रसों का रसपान भी करते थे। वे असहाय व निर्बल को देखकर करुणा भाव से भर जाते थे। देश की या किसी व्यक्ति की दयनीय दशा देखकर रातभर रोते थे। किसी दुष्ट या पापी को दण्ड देने के लिए क्रोधित इतने अधिक होते थे, उनको देखकर दुष्ट डरके मारे भयभीत होकर उनके पैरों में पड़कर क्षमा मांगते थे। उनका कण्ठ भी बड़ा मधुर था। मन्त्रों को जब सस्वर बोलते थे या भजन गाते थे तो लोग झूमने लग जाते थे। इन सभी रसों का दिग्दर्शन उनके जीवन में पग-पग पर होता है। अन्य रसों के साथ-साथ इन्हें मनोरंजन करना भी प्रिय लगता था। यहाँ उनके जीवन की कुछ घटनाएँ लिख रहे हैं जिनसे उनका मनोरंजन स्वभाव का दिग्दर्शन होता है, वे इसी भाँति हैं—

(1) यह घटना सन् 1867 की चासी ग्राम की है। पण्डित गंगाप्रसाद जी स्वामी जी के एक श्रद्धालु अनुयायी थे जिस प्रकार स्वामी जी जाटों को, राजपूतों को, बणियों को यज्ञोपवीत देते थे, उनका अनुकरण करके गंगाप्रसाद जी भी उसी प्रकार गाँव-गाँव में विचरण करते हुए जनेऊ धारण कराते थे। उनके इस कार्य से स्वामी जी बहुत प्रसन्न थे। एक दिन, गंगाप्रसाद जी ने स्वामी-चरणों में उपस्थित होकर निवेदन किया कि महाराज! मैंने बहुत बड़ी जन-संख्या को जनेऊ धारण कराये हैं। स्वामी जी ने विनोद भाव से हँसते हुए कहा कि यज्ञोपवीत देते ही जाते हो या किसी का उतारते भी हो? उसने विनती की—भगवन्! कभी जनेऊ उतारा भी जाता है? स्वामी जी ने कहा हाँ, जो जन धर्म-कर्महीन हो जाय उसके उपवीत (जनेऊ) उतार लेने चाहिएँ।

(2) उसी गाँव की घटना है कि पण्डित गंगाप्रसाद का गुरु प्रायः स्वामी जी के पास आया जाया करता था। एक दिन वह स्वामी जी कुटिया पर अपने वस्त्र रख, गंगा तीर पर स्नानार्थ जाने लगा। स्वामी जी विस्मयाकार में पूछा कि आपकी भुजा में क्या है? वह बोला महाराज, यह 'अनन्त' है। स्वामी जी झट उसके पास चले गये और उंगलियों से नाप कर कहने लगे कि यह तो इतने अंगुल का है, अनन्त कहाँ है? उसने लज्जा के मारे वह अनन्त तुरन्त उतारकर गंगा में बहा दिया।

(3) स्वामी जी चासी से अनूपशहर पधारे। वहाँ ठाकुर गिरवरसिंह चांदौख-निवासी स्वामी जी की सेवा में आये। उस समय उनके पास नर्मदा से मंगवाये हुए गोलपिंड भी थे। वे उनका प्रतिदिन पूजन किया करते थे। ठाकुर महाशय ने स्वामी जी से पूछा कि क्या शिव पूजा अच्छी है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि इससे तो चिउंटियों की पूजा करना अच्छा है, क्योंकि जो नैवेद्य उस पर चढ़ाया जाता है उसे यह बटिया तो नहीं खा सकती परन्तु चिउँटियों पर चढ़ाओगे तो वे अवश्य खा लेवेंगी।

(4) स्वामी जी महाराज पौष सुदी 6 सं० 1930 तदनुसार सन् 1873 को अलीगढ़ में आये और राजा जयकृष्ण जी के अतिथि बने। महाराज का शुभागमन सुनकर सहस्त्रों नगर निवासी तथा आसपास के गाँव के लोग उपदेश सुनने आने लगे। सारे नगर में स्वामी जी के प्रचार का प्रभाव था। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी सत्संग में आते थे। व्याख्यान के पश्चात् शंका-समाधान भी होता था। उसमें रात के दस बज जाया करते थे। स्वामी जी के इस अनथकपन की सभी प्रशंसा करते थे। एक दिन, एक पण्डित मन्दिर के चबूतरे के ऊँचे स्थान पर बैठकर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने लगा। लोगों ने उसके ऊँचे स्थान पर बैठने को बुरा समझा। कई भद्र पुरुषों ने उसे समझाया कि सभ्य पुरुषों की तरह बैठकर वार्त्तालाप करो, परन्तु वह ऐसा हठीला था कि वहीं डटा रहा। स्वामी जी ने लोगों से कहा कि कोई हानि नहीं, पण्डित जी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्त्व प्राप्त नहीं होता। यदि ऊँचा आसन बड़ाई का कारण हो तो पण्डित जी से ऊँचे वृक्ष पर कौआ बैठा है।

(5) सन् 1879 में स्वामी जी कानपुर होते हुए दानापुर पहुँचे। वहाँ स्वामी जी से एक पुरुष ने प्रार्थना की, "महाराज! अभ्यास में मन लगाने का बहुत ही यत्न करता हूँ, परन्तु मन नहीं लगता। इसके संकल्प-विकल्प शान्त ही नहीं होते।"

स्वामी जी ने व्यंग्य तथा विनोद भाव से कहा कि "यदि मन नहीं टिकता तो भाँग भवानी का एक लोटा और चढ़ा लिया करो।"

यह उत्तर सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन कहने लगा कि स्वामी जी को तो पता भी नहीं है कि मैं भाँग पीता हूँ। फिर यह कैसे जान गये? सच है सत्पुरुषों के सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं होती। उनका महात्म्य अगम्य हुआ करता है। इसी प्रकार एक दिन एक अन्य महाशय ने भी निवेदन किया— भगवन्! उपासना में चंचल चित्त को टिकाने के लिए किसी योग-क्रिया का उपदेश दीजिये।

स्वामी जी पहले वाले भाव से ही शिक्षा दी कि एक विवाह और कर लो, फिर चित्त आप ही स्थिर हो जायेगा। यह उत्तर सुनकर, वह व्यक्ति अति लज्जित और विस्मित हुआ। लज्जा तो उसे इसलिए आई कि एक स्त्री के जीते जी उसने दूसरा विवाह कर लिया था और आश्चर्य इसलिए हुआ कि बिना बताये, महाराज को इसका ज्ञान हुआ तो कैसे हुआ?

(6) यह घटना सन् 1872 की है। स्वामी जी सायंकाल 8 बजे पटना से चलकर, गाड़ी रात के बारह बजे जमालपुर जंक्शन पर पहुँची। उस समय मुंगेर को जाने वाली गाड़ी के छूटने में एक घण्टा शेष था। स्वामी जी पटना की गाड़ी से उतरकर वहीं जमालपुर स्टेशन के आँगन में टहलने लग गये। उस समय वहाँ एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नी सहित खड़ा था। उस इंजीनियर की पत्नी ने कौपीन मात्र धारी एक परमहंस को अपने सामने घूमता देखकर बुरा माना। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त जाकर स्टेशन मास्टर से कहा, "यह कौन नंगा टहल रहा है? इसे इधर-उधर घूमने से बन्द कर दो।" स्टेशन मास्टर ने महाराज को अति विनीत भाव से कहा, "भगवन्! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिये। मुंगेर की गाड़ी के जाने में अभी बड़ी देर है।"

स्वामी जी पहले ही सब कुछ समझ गये थे। इसलिये उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा, जिस महाशय ने मुझे हटा देने के लिए आपको यहाँ भेजा है, उसे जाकर कह दीजिये कि हम उस युग के मनुष्य हैं, जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा, अदन उद्यान में, नग्न घूमने में किंचित् भी लज्जा न करते थे। महाराज ने टहलना पहले की भांति ही जारी रक्खा।

शेष पृष्ठ 7 पर....

www.thearyasamaj.org

प्रभु हमारे सब मनोरथ पूर्ण करते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

परमपिता परमात्मा दयालु हैं। हम सदा उनकी दया पाने के लिए यत्न करते हैं। जब उनकी हम पर दया हो जाती है तो वह पिता हम पर अपना अपार स्नेह करते हुए हमारा ज्ञान का कोष, ज्ञान का खजाना भर देते हैं। इस ज्ञान के खजाने के मिलते ही हमारे सब मनोरथ, सब कामनाएं पूर्ण हो जाते हैं। इस बात को यह मन्त्र इस प्रकार बता रहा है—

स नो व्रषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा व्रधि।अस्मभ्यमप्रतिष्कुत:॥

(ऋग्वेद 1.7.6)

इस मन्त्र में दो बिन्दुओं पर विचार किया गया है—

1. ज्ञान के भण्डार को खोलो—

मन्त्र आरम्भ में ही कह रहा है कि हे प्रभु! आप हम वाज व सहस्र धन अर्थात् आप हमें भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की विजयें, दोनों प्रकार की सफलताएँ हमें दिलाने का कारण हैं, क्योंकि आप हमारे मित्र हो। मित्र सदा अपने मित्र के सुख-दु:ख का ध्यान रखता है, उसे सब प्रकार की वह सुख-सुविधायें दिलाता है, जिनकी उसे आवश्यकता होती है। यह आप ही हैं, जिसकी मित्रता के कारण हम यह सब प्राप्त कर पाते हैं। इसलिए हम सदा आपका साथ, सदा आपका सहयोग, सदा आपकी मित्रता बनाए रखने का प्रयत्न करते हैं।

हे सब प्रकार के सुखों को देने वाले मित्ररूप प्रभो! हे सदा, सर्वदा सब प्रकार के उत्तम फलों-प्रतिफलों के देने वाले प्रभो! आप हमारे लिए उस ज्ञान के कोष को, उस ज्ञान के भण्डार को खोलिए।

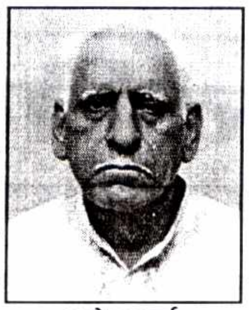

अशोक आर्य

ब्रह्मचर्य का भाव होता है ज्ञान को चरना, ज्ञान में घूमना, ज्ञान में विचरण करना। इस ब्रह्मचारी को आचार्य लोग विविध विषयों का, अनेक प्रकार के विषयों का ज्ञान कराते हैं, ज्ञान का उपभोग कराते हैं, ज्ञान का भक्षण कराते हैं, ज्ञान में घुमाते हैं, इस ज्ञान की सैर कराते हैं। जिस भी वस्तु का भक्षण या चरण किया जाता है जीव उसका चरु बन जाता है। मानव मुख्यरूप से ज्ञान का भक्षण करने के लिए आचार्य के पास जाता है, वहाँ से ज्ञान चरु बनकर निकलता है। जब हम इसे विशालता से देखते हैं, जब हम इसे बटाकर देखते हैं, जब हम इसका आवरण करके देखते हैं तो इसका प्रकट करना ही वेद ज्ञान का कोश है, वेद ज्ञान का भण्डार है।

प्रभु कृपा ही इस ज्ञान के भण्डार को खोलने की चाबी है, कुंजी है। जब तक हमें उस पिता की दया नहीं मिलती, तब तक हम इस ज्ञान का ताला नहीं खोल सकते। इसलिए हम सदा ही उस पिता की दयारूपी वरदहस्त पाने का प्रयास करते रहते हैं। ज्यों ही हम उस प्रभु का आशीर्वाद पाने में सफल होते हैं, त्यों ही हम इस ज्ञान के भण्डार का ताला खोलकर इसे पाने में सफल हो पाते हैं। हम इसे खोलकर ज्ञान का विस्तार कर पाते हैं।

2. प्रभु कभी इंकार नहीं करता—

परमपिता परमात्मा प्रतिशब्द से रहित है। वह अपने भक्त के लिए, अपने मित्र के लिए न नामक शब्द अपने पास रखता ही नहीं। उसके मुख से अपने मित्र के लिए, अपने उपासक के लिए, अपने निकट बैठने वाले के लिए सदा हां ही निकलता है, सहयोग ही देता है, मार्गदर्शन ही देता है, ज्ञान ही बांटता है, कभी भी नकारात्मक भाव प्रकट नहीं करता। भाव यह है कि जीव प्रभु की प्रार्थना करता है तथा चाहता है कि वह पिता सदा उसको सकारात्मक रूप से ही देखें, कभी नकारात्मक उत्तर न दें। वह प्रभु हमारी प्रार्थना को सदा ध्यान से सुने।

परमपिता परमात्मा को सत्रा दावन कहा गया है। इसका भाव है वह पिता सदा देने ही वाले हैं, सदा दिया ही करते हैं, बांटते ही रहते हैं, किन्तु देते उसे हैं जो नि:स्वार्थ भाव से मांगता है, जो देने के लिए मांगता है, जो दूसरों की सहायता के लिए मांगता है, ऐसा व्यक्ति ही प्रभु के दान के लिए सुपात्र होता है, ऐसा व्यक्ति ही प्रभु से कुछ पाने के लिए अधिकारी होता है, ऐसा व्यक्ति ही उस पिता की सच्ची दया का अधिकारी होता है। यदि पिता की दया प्राप्त हो गई तो उसे सब कुछ ही मिल गया।

अत: मन्त्र के इस अन्तिम चरण में जीव प्रभु से याचना करता है कि हे प्रभो! हम सदा आपसे यह ज्ञान का कोष पाने के अधिकारी बने रहें।

योग से मुक्ति

योगशास्त्र के प्रिय प्रणेता, मानवता के मनुज महान्।
दूषित दुर्मति दुर्गुण मन के, हरते दोष करत कल्याण॥
शुद्ध आत्मा बने योग से, नित्य निकट निर्वाण का धाम।
भवबन्धन दु:ख मोचक मुनि को, बारम्बार करे प्रणाम॥
यम से है व्यवहार मधुरता, नियम से अन्तर्मुख हो ज्ञान।
आसन से स्थिरता सधती, प्राणायाम से प्राणापान॥
प्रत्याहार से स्वामी बनता, मनेन्द्रियाँ होती स्वाधीन।
नियमित निश्चित चित्त टिके जहाँ, धारणा शक्ति तहाँ आसीन॥
धारणा धरते-धरते ध्यावे, ओम् नाम का करें बखान।
धारणा से सूक्ष्म गति जो, वही अवस्था होती ध्यान॥
ध्याता ध्यान ध्येय एकता, शुद्ध समाधि की पहचान।
पावे प्रभु को परम प्रीति से, चित्त की शुद्धि निर्मल ज्ञान॥
मोक्षमार्ग का यही उपाय, ना इसमें किंचित् अज्ञान।
वेदों का उपदेश यही है, अन्य मार्ग न कोई जान॥

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य,
सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्यों के तीर्थ

दयानन्दमठ, दीनानगर

जिला गुरदासपुर (पंजाब)

को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर

हीरक जयन्ती समारोह

18, 19, 20 अक्तूबर, 2013

को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- **स्वामी सदानन्द सरस्वती**

अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति

सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

शिविर सूचना

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक 28 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2013 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

अध्यक्षता : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़ वाले)

आशीर्वचन : **पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी**

शिविर में भाग लेने वाले साधक को पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा शिविर शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव 27.10.13 की सायं तक पहुँचें।

निवेदक : प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पर्क सूत्र : 9355674547, 9466008120, 9215676662

www.thearyasamaj.org

उसी का जप

-: वेद-मन्त्र :-

प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत्।
विप्रां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे॥ 98॥ (सामवेद)

शब्दार्थ:-इस मन्त्र का मुख्य वाक्य है कि उसी के लिये (वच:) स्तुतिवाचन का (प्र-भरत) प्रकर्षेण संपादन करो। यह स्तुति वचन ही (पूर्व्यम्) पूरण तथा पालन करने वाला होगा। (प पालनपूरणयो:) तथा (बृहत्) तुम्हारी वृद्धि का कारण बनेगा (बृहि वृद्धौ)।

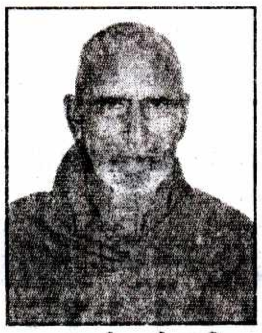

आचार्य बलदेव जी

जब मनुष्य उस प्रभु के गुणों का ज्ञान करता है तो उन गुणों में प्रीति होकर वह अपने भक्तिभाजन के अनुसार बनने का प्रयत्न करता है। यह प्रभु का स्मरण उसे अशुभ बातों की ओर जाने से बचाकर उसका पालन भी करता है। प्रभु के नाम का स्मरण वासना का विनाश करता है। वासना, प्रबल है, हम उसे नहीं जीत पाते, परन्तु प्रभु तो 'स्मर-हर' हैं, हमारे लिए वे इस वासना को नष्ट कर देते हैं। सो यह नाम स्मरण अहंकार आदि सभी भावनाओं को समाप्त करने के कारण 'पूर्व्य' है। यह हमें आत्मस्वरूप का स्मरण करा उत्थान की ओर ले चलने के कारण 'बृहत्' भी है।

'हम उस प्रभु का किस रूप में स्मरण करें?' इसका उत्तर मंत्र में 'होत्रे', 'अग्नये', 'विप्रां ज्योतींषि बिभ्रते न' तथा 'वेधसे' इन शब्दों के द्वारा दिया गया है। वह प्रभु होता है (हु दाने) देने वाले हैं। जैसे माता अपने लिये कुछ भी न बचाती हुई सब कुछ बच्चों को देकर प्रसन्न होती है, उसी प्रकार यही जगज्जननी वस्तुत: होत्री है। अपने कुछ न रखकर सब कुछ जीव के लिए दे रही है। हमें भी अपने उस महान् सखा का अनुकरण करते हुये होता बनने का प्रयत्न करना चाहिये।

'अग्नये' शब्द प्रभु के हमें आगे ले चलने की भावना को व्यक्त करता है। हमें उन्नत करते-करते वे मोक्ष स्थान तक पहुंचायेंगे। स्वयं तो प्रभु प्रत्येक गुण की चरमसीमा के रूप में सबसे अग्र स्थान में स्थित हैं ही। वे परमेष्ठी हैं। हमें चाहिये कि हम आगे बढ़ने के लिए अपने में अनुकूलता को पैदा करें। औरों की उन्नति में भी यथासम्भव सहायक हों।

(विप्रां न) मेधावियों जैसे लोगों के लिए (ज्योतींषि) प्रकाश को (बिभ्रते) धारण करते हुए प्रभु के लिए हम स्तुतिवचन को धारण करें। वे प्रभु सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि मेधावियों को वेद का ज्ञान प्राप्त कराते हैं और उनके द्वारा गुरु-शिष्य परम्परा से हमें भी वे ज्ञान देते हैं और अब भी हम अपनी बुद्धि को परिष्कृत करते हैं तो उस हृदयस्थ प्रभु से प्रकाश पाते हैं। हमें भी प्रकाश को प्राप्त कर औरों को प्रकाश देने का प्रयत्न करना चाहिए।

(वेधसे) वे प्रभु (वेधा) विधाता हैं, प्राणिमात्र का विशेष रूप से धारण कर रहे हैं, हमें भी यथासम्भव इस दिशा में प्रयत्न करना ही चाहिए।

इस प्रकार प्रभु से विशेष रूप से स्तुति वचनों को धारण करने वाला व्यक्ति 'गाथिन:' कहलाता है, यह सदा उसी का गायन करता है। प्राणिमात्र में प्रभु का ध्यान करता हुआ यह सभी का मित्र 'विश्वामित्र' होता है। इसका सभी के साथ स्नेह ही स्नेह होता है, यह द्वेष को अपने अन्दर नहीं आने देता।

भावार्थ—प्रभु के नाम का जप करो। यह तुम्हारा पालन, पूरण व वृद्धि करने वाला होगा।

—आचार्य बलदेव

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 08901387993 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

मेरी कहानी मेरा जागरण

फल मीठा और निरापद

मां मेरे साथ कम, भाइयों के बाल-बच्चों के साथ अपने पैतृक आवास में अधिक रहना पसन्द करती थीं। राजकीय सेवा में मेरा जहाँ भी स्थानान्तरण होता था, तो एक बार निरीक्षण को अवश्य आ जाती थीं। वे मुझे बुलाती भी रहती थीं और मैं उनसे मिलने के लिए आतुर भी रहता था। एक बार की बात है कि मेरी राज्य स्तरीय बैठक राजधानी लखनऊ में सोमवार के दिन पड़ी। अलीगढ़ का मार्ग तो सीधा ट्रेन के द्वारा लखनऊ पहुंचने वाला था, किन्तु मैं चक्कर लगाते हुए फर्रुखाबाद के मार्ग से शाहजहाँपुर जनपद के उपनगर में रविवार की प्रात: पहुँच गया। पूरा दिन व रात्रि सबसे मिलने-मिलाने में निकल गये और मैं दिन निकलने से पहले ही शाहजहांपुर के रेलवे स्टेशन पर पहुंच गया। मैंने भीड़-भाड़ से भरे हुए प्लेट फार्म पर जैसे ही अपने पैर बढ़ाये, तो वहाँ पूर्ण गणवेश में सज्जित एक युवा पुलिस अधिकारी आगे बढ़े और मेरे पैर छूकर प्रणाम करने लगे। हाथ जोड़ कर कहने लगे—"प्रिंसिपल साहब, आपने बीसलपुर में मुझे पढ़ाया था।" मैंने कहा—मैं वह तो नहीं हूँ, पर आपनेकोई भूल नहीं की है, आशीर्वाद देने की पात्रता मेरे पास है—'शुभं भवतु-सौभाग्यमस्तु' आशीर्वचन बोलकर मैं आगे बढ़ गया। मुझे तो मेल ट्रेन का टिकट प्राप्त करने की चिन्ता थी।

टिकटखिड़की पर लम्बी दोहरी पंक्ति एवं इधर-उधर सेस्थूल देहधारी घुसपैठियों की दौड़-धूप देखकर मुझे टिकट मिलने में विलम्ब तथा गाड़ी छूट जाने का भय सताने लगा। धैर्यपूर्वक प्रभु स्मरण करते हुए मैं खिड़की के निकट भीतर बैठे टिकट बाबू के सामने पहुँच गया। देखा, वे तो इधर-उधर से खिड़की में घुसे हाथों व रेजगारी की अदला-बदली के शोर से तंग, बहुत झल्लाए हुए हैं। ऐसे आवेश की मुद्रा में उन्होंने मुझे टिकट व मुड़े-तुड़े नोट मेरी मुट्ठी में थमा दिये। बोले, लो पकड़ो और आगे बढ़ो। मैंने उनसे कहा, जरा रुकिये, आपने मुझे अधिक रुपये लौटा दिये हैं। मैंने आपको पचास रुपये का नोट दिया था, आपने सौ का समझकर पूरा पचास का नोट व कुछ और रुपये दे दिये हैं। नोट वापस पाकर उनका क्रोध छूमन्तर हो गया था। वे 'थैंक्यू सर वेरी-वेरी थैंक्यू सर' कहते रह गये और मैं बढ़कर उस प्लेटफार्म पर आगया, जहां से लखनऊ की गाड़ी जानी थी।

देखता क्या हूँ कि सवारियों की दशा-दुर्दशा का दृश्य प्रस्तुत कर रही है। स्लीपर के कोच प्रात: शीत के कारण बन्द हैं। लोग टपक जाने की स्थिति में भी खिड़कियों से लटक रहे हैं। मैं गाड़ी में प्रवेश के लिए चक्कर पर चक्कर लगाता जा रहा हूँ। बैठक में समय से न पहुंच पाने के दुष्परिणाम से भयभीत हो रहा हूँ। इधर इंजन ने सीटी दी उधर एक डिब्बे की खिड़की से वही पुलिस अधिकारी मुझे निहारते हुए हाथ के संकेत से बुला रहे थे। उनकी सहायता से मैं अपनी राज्य स्तरीय बैठक में समय से पहुंच कर कर्त्तव्य का निर्वाह कर सका। इसके लिये मैं आज भी प्रभु का आभार व उन पुलिस अधिकारी महोदय का धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। सोचता हूँ कि ईमानदारी का फल मीठा तो होता ही है और यह मधुमेह आदि व्याधियों से भी बचाये रहता है, क्योंकि पुरुषार्थ व परिश्रम की कमाई से तन-मन-वाणी तीनों सक्रिय व स्वस्थ रहते हैं।

—देवनारायण भारद्वाज,
सेवानिवृत्त सहायक कृषि निदेशक
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001

शोक-समाचार

बड़े दुखित हृदय से सूचित किया जाता है कि आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कालका जिला पंचकूला के उपप्रधान लाला रामधन जी दिनांक 5.8.2013 को स्वर्ग सिधार गये हैं। इनकी आयु 93 वर्ष की थी तथा इनकी श्रद्धाञ्जलि सभा दिनांक 07.08.2013 को आर्यसमाज कालका में आयोजित की गई। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सुनीता लाकड़ा, प्रधानाचार्या,
आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कालका, जिला पंचकूला

www.thearyasamaj.org

वेदप्रचार यात्रा सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए कप्तान जगराम आर्य के नेतृत्व में ग्राम गुलावला, मेघोत हाला, जैनपुर, मौसमपुर, बिहारीपुर, आँतरी, छापड़ा कमानियाँ, खातौली जाट, खातौली अहीर, धोलेड़ा, बेरुण्डला, चिरागपुरा, मुकन्दपुरा, टहला और ताजीपुर में 15 सितम्बर से 22 सितम्बर तक वेदप्रचार सम्पन्न हुआ अब तक 366 गाँवों में वेदप्रचार सम्पन्न हो चुका है। वेदप्रचार करने से मानव मात्र को आर्यसमाज के सिद्धान्तों और मान्यताओं की जानकारी होती है। प्राय: करके लोगों में यह मिथ्या भ्रान्ति बनी हुई है कि आर्यसमाजी किसी को भी नहीं मानते अर्थात् न भगवान् को और न ही देवी-देवताओं को मानते हैं। जब भगवान् और देवी-देवताओं के वास्तविक स्वरूप को समझाते हैं तो लोगों की भ्रान्तियों का समाधान हो जाता है। खण्डन के साथ-साथ मण्डन करना भी अत्यावश्यक है। जैसे फोड़े की मवाद निकालने के लिए चीरा लगाकर मरहम पट्टी की जाती है उसी प्रकार खण्डन के साथ मण्डन भी हो। हरयाणा पुलिस से सेवानिवृत्त थानेदार रामचन्द्र मेघोत हाला निवासी केवल एक बार वेदप्रचार सुनने से आर्यसमाजी बन गया और वेदप्रचार दल का सदस्य बन गया। इसी प्रकार ग्राम शहबाजपुर का सरपंच चुन्नीलाल प्रात: से सायं तक शराब पीता था, वेदप्रचार पर में हवन पर प्रतिज्ञा की कि मैं कभी शराब का सेवन नहीं करूंगा। अब वह बिल्कुल भी शराब नहीं पीता है। प्रत्येक गांव में वृक्ष लगवाते हैं। गाय पालने की प्रेरणा देते हैं। भ्रूणहत्या बन्द कराते हैं। युवाओं को ब्रह्मचर्य धारण कर नैतिक शिक्षा देते हैं। प्रतिदिन दो विद्यालयों में जाकर वेदप्रचार करते हैं। रात्रि 8 से 10 बजे तक पारिवारिक सत्संग करते हैं। वृद्धों को सम्मान दिलाते हैं। अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड आदि प्रचार से समाप्त किया जा सकता है। जब अन्धकार है तो प्रकाश का अभाव है और प्रकाश है तो अन्धकार का अभाव हो जाता है। सत्य सूर्य के समान होता है, जो कुछ काल के लिए बादलों में छिप तो सकता है, परन्तु उसके बाद जब वह अपनी किरणों से बादलों का छेदन कर चमकता है तब उसका तेज पहले से भी अधिक होता है। आज भारत की दुर्दशा इन नकली भगवानों के कारण ही है। सर्वव्यापक को एकदेशी मानना भगवान की निंदा है। जो वेदविरुद्ध क्रियायें करते हैं वे सब नास्तिक हैं। नारी जाति को एक नई ज्योति व प्रेरणा देते हैं। हजारों बहनों को प्रेरणा मिली है। आज से आठ सौ वर्ष पूर्व हमारे देश में तम्बाकू का प्रचलन नहीं था। वास्कोडिगामा पुर्तगाल से भारत में तम्बाकू का पौधा लाया। आज कोई बीड़ी, कोई सिगरेट, कोई हुक्का और चिलम पी रहे हैं। बहुत सारे तम्बाकू खाने भी लग गये हैं, इसके कारण पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। लार्ड मैकाले ने आर्ष शिक्षा गुरुकुल प्रणाली को समाप्त करके अंग्रेजी स्कूल खोले और सहशिक्षा को लागू कर दिया। औरंगजेब ने आर्य संस्कृति को नष्ट करने के लिए वैदिक पुस्तकालयों में आग लगाई। तलवार की नोंक पर आर्यों की चोटी काटी और जनेऊ उतरवाई। अफ्रीका के जंगलों से इस देश में भैंस लाई गई जिससे लोगों की बुद्धि मलिन हो गई। बोपदेव ने पुराणों में गपोड़े लिखे जिससे जनता भ्रमित हो गई। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि पुराण लिखने वाला माँ के गर्भ में ही नष्ट हो जाता तो इतना पाखण्ड नहीं बढ़ता। वेदप्रचार में सहयोग देने वाले पं० रमेश शास्त्री, मास्टर अमृतलाल, थानेदार रामचन्द्र, बलदेवसिंह चहल, महाशय फूलचन्द, लक्ष्मी नारायण आदि हैं।

—कप्तान जगराम आर्य, संचालक
वेदप्रचार यात्रा (महेन्द्रगढ़)

।। ओ३म्।।

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक) का

23वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक 27 अक्तूबर 2013 रविवार तदनुसार कार्तिक कृष्णा अष्टमी सम्वत् २०७०

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रविवार दिनांक 27 अक्तूबर 2013 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान **पूज्य श्री आचार्य बलदेव जी** की अध्यक्षता में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर **स्वामी आर्यवेश जी,** मन्त्री वैदिक विरक्त मण्डल, आध्यात्मिक प्रवचनकर्ता **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** रोजड़, वैदिक विद्वान् **स्वामी आशुतोष जी** अजमेर, **श्री सत्यवीर जी शास्त्री** मन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, **श्री रामपाल शास्त्री** प्रधान मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली, **महाशय गुरुदत्त जी आर्य,** प्रधान-आर्यसमाज पालिका कालोनी, रोहतक के अतिरिक्त अनेक प्रतिनिष्ठित साधु-संन्यासी, विद्वान् तथा समाज सेवी और राजनेता पधार रहे हैं। अत: इस शुभ अवसर पर आप परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर महोत्सव की शोभा बढ़ाएं।

कार्यक्रम संचालक : वैदिक विद्वान् शील स्वभाव **डॉ० धर्मपाल आर्य।**

सांस्कृतिक कार्यक्रम : **श्री योगेश शास्त्री** द्वारा परिष्कृत भाषण, भजन और वाद-विवाद आदि का रोचक कार्यक्रम भी ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

व्यायाम प्रदर्शन : **श्री चन्द्रदेव जी,** प्रधान आर्य वीर दल हरियाणा के निर्देशन में उन द्वारा प्रशिक्षित ब्रह्मचारी आश्चर्यजनक योगासन तथा व्यायामों का प्रदर्शन करेंगे।

महायज्ञ : **डॉ० श्यामदेव जी** के ब्रह्मत्व में प्रात: महायज्ञ का आयोजन होगा। यज्ञ प्रेमी सज्जन श्रद्धानुसार घृत सामग्री का योगदान करके पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के यजमान

यज्ञ के यजमान महायज्ञ में सादी वेशभूषा में समय पर यज्ञशाला में पहुंचे। क्योंकि उन्हें स्वयं आहुतियां देकर पुण्यार्जन करना है।निम्न व्यक्तियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी यज्ञमान के लिए 20 अक्तूबर तक अपना नाम भेज सकते हैं।

सर्वश्री विवेकानन्द शास्त्री, श्री देव भैयापुर, विजय लाढ़ौत, सुरेश जी नवयुग पब्लिक स्कूल, रोहतक, करतार सरपंच, अशोक शास्त्री, संजीव धमीजा, वेद आरेवाला, सतीश मित्तल, कैप्टन जगवीर मलिक कल्हावड़, जितेन्द जी ऋषिकुल, रविन्द्र नांदल, प्रि० हीरा लाल जी, सुखवीर सिंह दलाल, शान्ति प्रकाश जी गणित अध्यापक, श्री दर्शन कुमार जी पीटीआई, राजेन्द्र जी हिन्दी अध्यापक, हरेन्द्र कुमार डी.पी., राजेन्द्र सिंहपुरा प्राध्यापक, बिजेन्द्र सिंह एस.एस. अध्यापक, श्री सत्यव्रत शास्त्री।

भजनोपदेशक : **श्री सुशील आर्य,** रोहतक **एवं बहन दयावती आर्या,** रोहतक

कार्यक्रम का समय

महायज्ञ...प्रात: 8.00 बजे से 9.30 बजे तक
भोजन...प्रात: 10.00 बजे से 11.00 बजे तक
व्याख्यान, भजनोपदेशक तथा अन्य कार्य................प्रात: 11.00 बजे से सायं 3.00 बजे तक
व्यायाम प्रदर्शन...सायं 3.00 बजे से 3.30 बजे तक

विशेष सूचना :- गुरुकुल द्वारा समय-समय पर समाज सुधार हेतु अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं, जिनके लिए आप सहर्ष निश्चिन्त होकर दान दे सकते हैं। गुरुकुल आपके दान का पात्र है। 1100/- या अधिक के दानियों को उत्सव पर मानपत्र दिये जायेंगे। 11000/- या अधिक के दानी का पत्थर पर नाम अंकित होगा। एक लाख या इससे अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम ग्रेनाइट पत्थर पर अंकित किए जायेंगे।

गुरुकुल द्वारा संचालित गतिविधियाँ

● न्यूनतम शुल्क लेकर छात्रों के शिक्षा भोजन आवास की व्यवस्था। ● निर्धन किन्तु मेधावी छात्रों को नि:शुल्क शिक्षा देना। ● संस्कृति रक्षा हेतु ग्रामों में साप्ताहिक यज्ञ प्रवचनों का आयोजन करना। ● भजनोपदेशकों द्वारा धर्म प्रचार कार्य। ● प्रतिवर्ष युवा चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन। ● गुरुकुल में योग प्रशिक्षण शिविर की व्यवस्था। ● प्रतिदिन आने वाले अतिथियों के भोजन आवास की अच्छी व्यवस्था। ● गृह त्यागी वानप्रस्थी, संन्यासियों हेतु नि:शुल्क और स्थाई भोजन आवास व्यवस्था।

नोट : उत्सव समाप्ति पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का दीपावली अवकाश 27 अक्तूबर 4 बजे से 5 नवम्बर तक रहेगा।

निवेदक

प्राचार्या :	कोषाध्यक्ष :	मन्त्री :	अध्यक्ष :	संरक्षक :
डॉ० हीरा लाल	मा० राप्रकाश आर्य	कपूर सिंह आर्य	आचार्य हरिदत्त	सेठ कृष्ण जी (हिमगिरि इण्डस्ट्रीज)

जन्मदिवस पर विशेष....

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती : एक प्रेरक व्यक्तित्व

❑ डॉ० राजपाल बरहाणा, जिला झज्जर, मो० : 9813844795

श्री सिद्धान्ती जी का जन्म ई० सन् 1900 में 'दशहरा' पर्व के दिन गाँव बरहाणा जिला झज्जर में चौ० प्रीतराम तथा श्रीमती मामकौर के घर हुआ। उस समय देश पराधीन था, ग्रामीण स्तर पर शिक्षा का प्रबन्ध न के बराबर था, अधिकतर आर्थिक स्थिति कृषि-आधारित थी। नल-कूप व नहर आदि के सिंचाई-साधन न होने से प्राय: सभी की गृह-स्थिति निर्धनतापूर्ण थी। श्री सिद्धान्ती जी के पिता सेना की सेवा में रहने तथा आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से वे गाँव में अन्यों से प्रबुद्ध तथा व्यक्तिगत व सामाजिक बुराइयों से दूर थे जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपने पुत्र जगदेव को उन तात्कालिक विषयम परिस्थितियों में भी जाट हाईस्कूल रोहतक से मैट्रिक तक की शिक्षा दिलवाई। सिद्धान्ती जी का अनुज उनसे 14 वर्ष छोटा था। जब आपकी आयु 16 वर्ष की थी तभी अचानक आपकी माता जी का देहान्त हो गया, जिसके कारण आपकी 16 वर्ष की अल्पायु में ही शादी कर दी गई तथा पढ़ाई छुड़ाकर सेना में भर्ती करा दिया गया। उनके व्यक्तित्व-विकास में बाधा दीवार बनकर खड़ी हो गई, पारिवारिक परिस्थितियों ने निर्माण-प्रक्रिया को अवरुद्ध कर सिद्धान्ती जी को जिम्मेदारियों के भार से लाद दिया। किन्तु,

बाधाएँ कब बाँध सकी हैं,
आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएँ कब रोक सकी हैं,
गिरकर उठने वालों को॥

इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले सिद्धान्ती जी निराशा के आवर्त से बाहर निकलकर, सेना में सैनिक जीवन जीते हुये, अपने पिता के दिये अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का प्रतिदिन स्वाध्याय करते और उसके अनुसार स्वयं आचरण करते तथा अन्य सैनिक साथियों को तदनुसार आचरण करने की प्रेरणा देते। आप वहाँ शराब और मांसाहार का विरोध करते तथा वैदिक विचारधारा का सैनिकों में प्रचार करते थे। अंग्रेजी शासन के उस युग में भी आपने सेना में युद्ध के लिए प्रयाण करते समय आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द के नारे लगवाये तथा सह-सैनिकों में आर्य-विचारधारा को प्रवाहित किया। सत्यार्थप्रकाश के स्वाध्याय से आपकी बुद्धि निर्मलता और सजगता की ओर बढ़ती गई जिसके परिणाम स्वरूप आपने सेना-सेवा को त्यागकर संस्कृतभाषा के अध्ययन का निश्चय किया। आपने सन् 1921 में सेना-सेवा का परित्याग कर, गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) में रहकर पुन: विद्या-अध्ययन के क्रम को प्रारम्भ किया। इसी क्रम में सन् 1925 में पिताजी का भी देहान्त हो गया, दूसरा भाई बहुत छोटा था, उसकी भी जिम्मेदारी भी साथ ही, संस्कृत की इस उक्ति के अनुसार—'**विघ्नेष्वनर्था बहुली भवन्ति**' अर्थात् विघ्न परम्परा में संकट पर संकट आते हैं तथा '**श्रेयांसि बहुविघ्नानि**' अर्थात् श्रेष्ठ कार्यों के सम्पन्न करने में प्राय: बहुत विघ्न आते हैं। इसी क्रम में सिद्धान्ती जी का डेढ़ वर्षीय पुत्र भी काल-कवलित हो गया, किन्तु आपने अग्रलिखित सिद्धान्त का अनुसरण करते हुये कि '**त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले**' अर्थात् संकट-काल में भी धैर्य का परित्याग नहीं करना चाहिये। अपने संकल्प को टूटने नहीं दिया। अनुज की शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध कर आप अपने संकल्प को पूर्ण करने में संघर्षरत हो गये। आप जैसों की कार्यपद्धति को ही देखकर किसी ने ठीक कहा है कि—

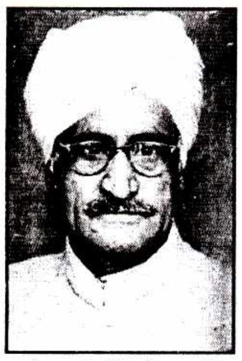
पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हो।
नाविक की धैर्य-परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

श्री सिद्धान्ती जी ने गुरुकुल मटिण्डू में पण्डित शान्तिस्वरूप जी से संस्कृत पढ़ते हुए एक वर्ष में ही पंजाब विश्वविद्यालय से प्राज्ञ व दूसरे वर्ष विशारद परीक्षा उच्च प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा लाहौर दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय से सिद्धान्त-विशारद व सिद्धान्त-भूषण की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। संस्कृत-अध्ययन के उपरान्त आपने अध्यापन सेवा क्षेत्र में प्रवेश करके निरन्तर 7 वर्ष तक गुरुकुल मटिण्डू की अध्यापन व प्रबन्धन द्वारा सेवा की। सन् 1929 में उत्तर-प्रदेश के जिला मेरठ में स्थित गुरुकुल आर्य महाविद्यालय किरठल का कार्यभार सम्भालकर निरन्तर सन् 1945 तक उसका सफल संचालन किया तथा पं० रघुवीर शास्त्री जैसे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तैयार किये। साथ ही समीपस्थ क्षेत्र में यज्ञ, संस्कार, प्रवचन व शास्त्रार्थ के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया। इसके अतिरिक्त आपने गुरुकुल किरठल का संचालन करते हुये ही सन् 1939 में आर्यसमाज द्वारा चलाये गये प्रसिद्ध हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में तथा सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। सन् 1950 में आपकी सामाजिक सेवा, योग्यता व कार्य-कुशलता को देखकर समाज सुधार के लिए गठित सर्वखाप नामक विशाल संगठन का आपको सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया, जिसके आप आजीवन प्रधान रहे। इस संगठन के माध्यम से आपने विभिन्न प्रदेशों में सर्वखाप पंचायतों का आयोजन कर अनेक सामाजिक रूढ़िगत कुरीतियों का उन्मूलन कर सुनीतियों को स्थापित कराया।

आर्यसमाज की संगठनात्मक संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आप महामन्त्री एवं प्रधान तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के कुलपति पद पर भी शोभायमान रहे। सन् 1957 में आर्यसमाज द्वारा चलाये गये हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा अन्त तक कारागार में रहे। अध्ययन-अध्यापन व लेखन में आपकी गहरी अभिरुचि थी, इसीलिए ऊपरलिखित सामाजिक सेवा व आन्दोलनों में भाग लेते हुये भी आपने 'आर्य मर्यादा' साप्ताहिक पत्र का वर्षों सफल सम्पादन तथा उसमें अनेक सैद्धान्तिक व सामयिक विषयों के लेख लिखे तथा स्वयं सम्राट नामक साप्ताहिक पत्र को सन् 1948 से 1954 तक सम्पादित व प्रकाशित किया जिसमें उनके लगभग 57 विशिष्ट लेख छपे। इसके अतिरिक्त अपने लोक-सेवा के व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर आपने निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण रचनाएँ कीं—(1) वैदिक धर्म परिचय, (2) छात्रोपयोगी विचारमाला, (3) वौदिक वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय, (4) वैदिक विवाह-पद्धति, (5) मृत्यु के बाद जीव की गति, (6) सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणियाँ आदि।

आपकी लोकप्रियता व जनसेवा की भावना को देखते हुये सन् 1962 में आपको झज्जर लोकसभा क्षेत्र से हरियाणा लोक समिति ने अपना उम्मीदवार बनाया तथा आप उक्त चुनाव में विजयी रहे। आपने अपने पाँच वर्ष के लोकसभा सदस्य काल में अपने क्षेत्र की भरपूर सेवा की। आपकी विस्तृत जनसेवा के परिणाम स्वरूप सन् 1977 में दिल्ली में आपका नागरिक अभिनन्दन किया गया। कुछ दिन अस्वस्थ रहने के बाद आपका 27 अगस्त सन् 1979 को दिल्ली में निधन हो गया। श्री सिद्धान्ती जी की स्मृति में उनके अभिन्न सहयोगी व मित्र श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी ने दयानन्दमठ रोहतक में 'सिद्धान्ती भवन' का निर्माण कराकर सन् 1981 में अपने करकमलों से उसका उद्घाटन किया, सम्प्रति उसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का कार्यालय है। उनके जन्म गाँव बरहाणा (झज्जर) में स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने श्री सिद्धान्ती जी की स्मृति में आर्यसमाज मन्दिर, श्री सिद्धान्ती भवन, श्री सिद्धान्ती यज्ञशाला व व्यायामशाला का निर्माण कराया है। साथ ही सिद्धान्ती जी के अनुज स्व० चौ० वेदमित्र व उनके पुत्र-पुत्रियों द्वारा साढ़े नौ एकड़ कृषिभूमि व 3,50,000 रु० की स्थिर निधि के अनुकरणीय व प्रशंसनीय दान के सहयोग से आर्यसमाज बरहाणा के परिसर में श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती नि:शुल्क धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय का सन् 1999 में निर्माण कराया गया जो तब से आज तक निरन्तर सेवारत है। हम सबका यह कर्त्तव्य बनता है कि उनके जन्मदिवस पर हम उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करें तथा उनके संघर्षमय व विद्वत्तापूर्ण जीवन से प्रेरणा पाकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयत्न करें। उनका विस्तृत जीवन-चरित वैदिक विद्वान् स्व० पं० सुदर्शनदेव जी ने लिखा है, उसको पढ़कर आप उनकी समस्त योग्यताओं व सेवा कार्यों से परिचित हो सकते हैं।

सन्ध्योपासन

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

सन्ध्योपासन कहाँ और कैसे करें ?

''सन्ध्योपासन एकान्त देश में एकाग्रचित्त से करें.....।''

जंगल में अर्थात् एकान्त देश में जा (कर) सावधान होके, जल के समीप स्थित होके नित्यकर्म को करता हुआ सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण अर्थ ज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल चलन को करे। परन्तु यह जप अपने मन से करना उत्तम है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 3, महर्षि दयानन्द)

सन्ध्या कितने बार करें ?

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

सन्ध्या और अग्निहोत्र सायं-प्रात: दो ही काल में करें। दो ही रात-दिन की सन्धि वेला है, अन्य नहीं।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 3, महर्षि दयानन्द)

कितने समय तक ध्यान करें ?

न्यून से न्यून एक घण्टा ध्यान अवश्य करें जैसे समाधिस्थ होकर योगी लोग परमात्मा का ध्यान करते हैं वैसे ही सन्ध्यापासन भी किया करें।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 3, महर्षि दयानन्द)

आचमन क्यों और कैसे करें ?

आचमन उतने जल को हथेली में लेके मूल और मध्य-देश में ओष्ठ लगाके करे कि वह जल कण्ठ के नीचे हृदय तक पहुँचे न उससे अधिक (और) न न्यून। उससे कण्ठस्थ कफ और पित्त की निवृत्ति थोड़ी-सी होती है।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 3, महर्षि दयानन्द)

मार्जन क्यों और कैसे करें ?

अर्थात् मध्यमा और अनामिका अंगुली के अग्रभाग से नेत्रादि अंगों पर जल छिड़के, उससे आलस्य दूर होता है। जो आलस्य (न हो) और जल प्राप्त न हो, तो न करें। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 3, महर्षि दयानन्द)

अघमर्षण मन्त्र का विचार—

तत्पश्चात् सृष्टिकर्त्ता, परमात्मा और सृष्टिक्रम का विचार नीचे लिखे मन्त्रों (अर्थात् अघमर्षण मन्त्रों से ऋतञ्च आदि) से करे और जगदीश्वर को सर्वव्यापक, न्यायकारी, सर्वत्र, सर्वदा सब जीवों के कर्मों के द्रष्टा को निश्चित मानके पाप की ओर अपने आत्मा और मन को कभी न जाने देवे किन्तु सदा धर्मयुक्त कर्मों में वर्तमान रखे। (संस्कारविधि, गृहस्थ, महर्षि दयानन्द)

मनसा परिक्रमा मन्त्रों का विचार—

इन मन्त्रों को पढ़ते जाना और अपने मन से चारों ओर बाहर भीतर परमात्मा को पूर्ण जानकर निर्भय, निश्शंक, उत्साही, आनन्दित (और) पुरुषार्थी रहना। (संस्कारविधि, गृहस्थ, महर्षि दयानन्द)

सन्ध्या न करने वाले के लिए दण्ड—

जो मनुष्य नित्य प्रात: और सायं सन्ध्योपासन को नहीं करता उसको शूद्र के समान समझकर द्विजकुल से अलग करके, शूद्रकुल में रख देना चाहिये। वह सेवा कर्म किया करे और उसके विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत भी न रहना चाहिये। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि सबकामों से इसको मुख्य जानकर पूर्वोक्त दो समयों में (अर्थात् प्रात:-सायं) जगदीश्वर की उपासना नित्य करते रहें। (पंचमहायज्ञविधि:)

सन्ध्योपासन का क्रम महर्षि दयानन्द कृत **'पंचमहायज्ञविधि'** एवं **'संस्कार-विधि'** गृहस्थ प्रकरण में देखें।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक	19 से 20 अक्तूबर 2013
2.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र का 101वां वार्षिकोत्सव	25 से 27 अक्तूबर 2013
3.	आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी	25 से 27 अक्तूबर 2013
4.	आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल	6 से 10 नवम्बर 2013
5.	आर्यसमाज भाकली, जिला रेवाड़ी	9 से 10 नवम्बर 2013
6.	ओम् साधना मण्डल, करनाल	16 से 17 नवम्बर 20134.

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आओ संगठित होकर आगे बढ़ें

❑ चाँदसिंह आर्य (चन्द्रदेव), महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर

गतांक से आगे....

13 सितम्बर—दिनभर कार्यालय कार्य।

14 सितम्बर—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा कार्यालय बैठक, सायंकाल गुरुकुल झज्जर व्यायाम प्रदर्शन।

15 सितम्बर—कोथल कलां आर्य-समाज उत्सव में प्रवचन एवं व्यायाम प्रदर्शन कार्यक्रम दिखाया।

16 सितम्बर—स्वामी सर्वानन्द जी की जन्मस्थली सासरौली के रा०व०मा० विद्यालय व एसडी स्कूल में कार्यक्रम। सायंकाल शिविर प्रारम्भ किया। रात्रि दयानन्द जी झाड़ली के फार्म हाउस पर विश्राम।

17 सितम्बर—प्रात: सरस्वती विद्या मन्दिर सासरौली, रा० माध्यमिक विद्यालय सुन्देरहेड़ी में कार्यक्रम दिया। सायंकाल शिविर प्रशिक्षण लगभग 150 शिविरार्थी।

18 सितम्बर—कार्यालय कार्य दोपहर तक सायंकाल सासरौली शिविर।

19 सितम्बर—सासरौली शिविर का समापन यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के साथ, छुछकवास रा०व०मा० विद्यालय में कार्यक्रम दिया।

20 सितम्बर—स्वामी ब्रह्मानन्द आश्रम बणी पुण्डरी में कार्यक्रम।

21 सितम्बर—रा०कन्या व०मा० विद्यालय व एमडी स्कूल बिरोहड़ में कार्यक्रम दिया।

22 सितम्बर—रोहतक, उचाना, कुरुक्षेत्र, जीन्द, सिंहपुरा गुरुकुल एवं बेरी आदि स्थानों पर सम्पर्क साथ में स्वामी देवव्रत सरस्वती।

23 सितम्बर—फरीदाबाद आर्ष योग संस्थान, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली होते हुए घूमनहेड़ा डाईट में कार्यक्रम रात्रि मलिकपुर भोजन करके वापिस कार्यालय।

24 सितम्बर—रा० व० मा० वि० बिरोहड़ एवं नीमली उच्च विद्यालय में कार्यक्रम दिया।

25 सितम्बर—रा० उच्च विद्यालय मसूदपुर में यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार करके, बालन्द, करौंथा होते हुए कार्यालय सायंकाल।

26 सितम्बर—रा० व० मा० वि० दुजाना में कार्यक्रम।

27 सितम्बर—संपर्क संवाद, कार्यालय कार्य और पत्रिका हेतु लेखन।

28 सितम्बर—आर्य व०मा०वि० झोझूकलां में यज्ञ एवं वीर भगतसिंह जन्म दिन कार्यक्रम, सायंकाल रेवाड़ी खेड़ा भिवानी शिविर रात्रि बाढ़ड़ा प्रचार।

29 सितम्बर—पाण्डवान आर्य-समाज उत्सव।

30 सितम्बर—आर्य वीर हरयाणा के प्रान्तीय सम्मेलन हेतु प्रवास रोहतक, भिवानी, जीन्द आदि स्थानों पर साथ में प्रान्तीय संचालक उमेद शर्मा व महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य।

शेष अगले अंक में....

पंचदिवसीय योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आश्रम आमसेना के तत्त्वावधान में छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुद्र जिलान्तर्गत ग्राम देवरी के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पंचदिवसीय 10 से 14 सितम्बर तक योग, व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 600 बालक-बालिकाओं को योग, आसन, प्राणायाम, जूडो, कराटे, कूम्फू, तलवारबाजी, लाठी चालन, दण्ड-बैठक, सूर्यनमस्कार आदि आत्मरक्षा के गुर सिखाये गये।

इस शिविर का समापन समारोह 14 सितम्बर को माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में रखा गया, जिसमें प्रदेश के राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष श्री सतीश जग्गी सहित अनेक गणमान्य सज्जन तथा गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम का संयोजन श्री भुलऊराम साहू जी ने किया और इस शिविर का संचालन डॉ. कुंजदेव मनीषी (अध्यक्ष, आर्यवीर दल ओडिसा) ने किया तथा प्रशिक्षण ब्र० स्वराज शास्त्री, ब्र० कृष्णदेव शास्त्री (व्यायाम शिक्षक) ने किया। सभी विद्यार्थियों को नैतिक तथा बौद्धिक शिक्षा देने का कार्य ब्र० राकेश शास्त्री ने किया। समापन के अवसर पर आदर्श कन्या गुरुकुल की आचार्या पुष्पा जी के उद्बोधन एवं कन्या गुरुकुल के ब्रह्मचारिणियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किया गया। ग्रामीणों ने इस अभूतपूर्व व्यायाम प्रदर्शन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस प्रकार यह शिविर हर्षित वातावरण में सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—आचार्य रणजीत 'विवित्सु'

आर्य-संसार

यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

झज्जर (24.9.2013)। यज्ञ समिति झज्जर के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में आर्यसमाज झज्जर के उपप्रधान महाशय रतीराम आर्य के संयोजकत्व में यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। अनमोल, टींकू, ज्योति, राहुल, उमेश आदि बच्चों ने हवन सम्पन्न कराया। श्रीमती सोनिया एवं श्री मुकेश आर्य मुख्य यजमान रहे। भट्टी गेट मौहल्ले के सैकड़ों बच्चों ने समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण की कामना की पूर्ति के लिए हवनकुण्ड में आहुतियाँ प्रदान कीं। जिला झज्जर की समस्त आर्यसमाजों के कोषाध्यक्ष श्री जयकिशन जी आर्य मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने बच्चों को निम्नलिखित संकल्प दिलवाए— प्रतिदिन कम से कम 5 मिनट के लिए अवश्य ही ईश्वर की उपासना करना, माता-पिता जी, दादा-दादी माँ आदि सज्जनों के चरणों का स्पर्श करके अभिवादन करना, मातृभाषा हिन्दी में हस्ताक्षर करना, गोदुग्ध का सेवन करना, अन्धविश्वास-पाखण्ड में नहीं फँसना, गाली-गलौच नहीं देना, चाय, कोल्ड-ड्रिंक्स आदि हानिकारक पदार्थों का सेवन नहीं करना। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० धर्मवीर जी आर्य खेड़ी आसरा ने आर्यसमाज के दस नियमों को राजनैतिक-उन्माद निवारक औषध बताया। केन्या, पाकिस्तान, मुजफ्फर नगर आदि स्थानों में हुए साम्प्रदायिक दंगों को जड़ से उखाड़ देने के लिए निराकार, न्यायकारी ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समाज में स्थापित करना होगा। बहन अंजु, रेखा, मनस्विनी, श्रीमती शान्तिदेवी, गिंदौडी, पुष्पा, विद्यादेवी, कमला, मामकौर, धीरज, सुभाष आर्य, यश, तुषार आदि महानुभावों ने भी यज्ञ में अपनी आहुतियां प्रदान कीं।

महर्षि दयानन्द विनोदप्रिय भी थे.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

इंजीनियर ने स्टेशन मास्टर को पुनः बुलाकर अपना आदेश दुहराया। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि महाशय! यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, जिसे मैं आंगन से निकाल दूँ। यह तो हम और आप जैसों को कुछ भी न समझने वाला एक स्वतन्त्र संन्यासी है। तब इंजीनियर ने स्वामी जी का श्रीनाम पूछा। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि इनका नाम दयानन्द सरस्वती है। इंजीनियर महाशय यह कहता हुआ कि क्या ये प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द सरस्वती हैं। तत्काल उठ खड़ा हुआ और स्वामी जी के समीप जाकर उसने विनीत भाव से नमस्कार किया और कहा, ''चिरकाल से मेरे चित्त में आपके दर्शनों की अभिलाषा थी। यह मेरा सौभाग्योदय है कि यहाँ आपके दर्शन हो गये हैं।'' इस लेख में स्वामी जी ने वैदिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए आदम और हव्वा को बाबा आदम और माता हव्वा कहकर सम्बोधित किया है। बाकी हर स्थान पर आपको आदम और हव्वा ही पढ़ने को मिलेगा। यह हमारी ही एक वैदिक संस्कृति है जो दूसरे मतों के महान् व्यक्तियों को भी सम्मानित शब्दों में सम्बोधित करना सिखाती है।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

आर्यसमाज पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का चतुर्थ वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज पालिका कालोनी भिवानी रोड रोहतक का चतुर्थ वार्षिक उत्सव दिनांक 4 से 6 अक्तूबर 2013 तक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी थे। वेदपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। उत्सव में वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन में प्रो. ओमकुमार आर्य, महोपदेशक जगदीशचन्द्र वसु, सत्यवीर शास्त्री मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सुभाष बत्रा पूर्वमंत्री हरियाणा सरकार, आचार्य बलदेव जी अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, महावीर धीर, शम्भुमित्र जी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों ने वेद, राष्ट्र व गोमाता के बारे में विचार रखे। उत्सव में 'करौंथा काण्ड' के शहीदों की श्रद्धाञ्जलि सभा का भी आयोजन किया गया। बहन दयावती आर्या, गायक पवनजीत आर्य, संजय आर्य ने मधुर गीतों से लोगों को आनन्दित किया।

—महाशय गुरुदत्त आर्य, प्रधान
आर्यसमाज पालिका कालोनी, रोहतक

सर छोटूराम के साथी प्रो. हरीसिंह नहीं रहे

रोहतक। सर छोटूराम के साथ रहे 92 वर्षीय प्रो. हरीसिंह का रविवार रात 6.10.2013 देहान्त हो गया। सोमवार दोपहर बाद उनके पैतृक गाँव झज्जर जिले के खेड़ीजट्ट में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। इस मौके पर आईपीएस (रिटा.) वीएन राय सहित सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण मौजूद थे। आजादी से पहले 24 अक्तूबर 1921 में जन्मे प्रो. हरीसिंह ने अपना पूरा जीवन छोटूराम की नीतियों का प्रचार-प्रसार करने में बीता दिया। अभी वे कई वर्षों से रोहतक के सैक्टर-14 में पुत्र डॉ. भूपसिंह के साथ रह रहे थे, जो मदवि के फाइन आर्ट डिपार्टमेंट में प्रोफेसर हैं। करीब 15 दिन से सेहत कमजोर होने के कारण वह बिस्तर पर थे। उनके विचार इतने क्रान्तिकारी थे कि इस दौरान जब भी कोई उनसे मिलने आता था तो छोटूराम के बारे में ही बातें करते थे। बीती 27 सितम्बर को आईपीएस वीएन राय उनसे मुलाकात करने आए थे, तब भी उनके साथ छोटूराम और भगतसिंह के बारे में घंटों बातें कीं।

प्रो. हरीसिंह, खेड़ीजट्ट

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक प्रो. हरीसिंह के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करती है और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—सभामन्त्री**

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है?

तो फिर भला देर किस बात की? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक

दूरभाष : 01262-216222

www.thearyasamaj.org

मासिक वैदिक सत्संग में कुलपतियों को किया सम्मानित

रोहतक, 6 अक्तूबर। दयानन्द मठ में मासिक वैदिक सत्संग के दौरान रविवार को भव्य स्वागत समारोह संरक्षक आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ हवन यज्ञ में आहुति डालकर किया गया। समारोह में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार व मदवि कुलपति हरस्वरूप चहल ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। कार्यक्रम में दोनों को अतिथि सत्कार कर उन्हें सम्मानित किया गया। मंच का संचालन करते हुए प्रो० ओमकुमार आर्य ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए प्रदेश में नई सोच पैदा कर बुराइयों से बचाने का आग्रह किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षक आचार्य बलदेव ने अपने सम्बोधन में दोनों कुलपतियों का अतिथि सत्कार करते हुए कहा कि विद्वान् देवता होते हैं। उनके सम्मान से समाज में सुशिक्षित होकर अनेक सुख फैलते हैं। उन्होंने अपने सम्बोधन में गायों की दयनीय स्थिति एवं उनके बचाव के लिए उठाए जा रहे कदमों की विस्तृत जानकारी देते हुए आमजन को गायों को बचाने में सहयोग करने का आह्वान किया।

सभाप्रधान आचार्य विजयपाल जी ने अपने सम्बोधन कहा कि शिक्षा देश की उन्नति में चार चांद लगाने के लिए बेहद जरूरी है। इसके बिना विकास व देश की उन्नति की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

देश का हर बच्चा शिक्षित हो, यह बेहद आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में दोनों कुलपतियों का योगदान बेहद सराहनीय है। इस अवसर पर सभामंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री, हरियाणा गोशाला संघ के प्रधान योगेन्द्र आर्य, महामंत्री आचार्य सर्वमित्र, राजवीर छिक्कारा, महेन्द्र जज, मास्टर रामपाल दहिया, हरदीपसिंह, मांगेराम पूर्व सरपंच डीघल व अभय आर्य मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आर्यावर्त था देश महान्

❑ देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य, म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी

आर्यावर्त था देश महान्, मिलते अनेक प्रमाण।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

आदिसृष्टि में ईश्वर ने, त्रिविष्टप पर मानव निर्माण किया।
अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, श्रेष्ठ पुरुषों को नाम दिया।
अग्नि को ऋग्वेद और वायु को यजुर्वेद का ज्ञान दिया।
आदित्य को दिया सामवेद, अंगिरा को अथर्ववेद का मान दिया।
चारों ऋषियों से पढ़ वेद, ब्रह्मा बन गया श्रेष्ठ महान्।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

पिता ब्रह्मा से पढ़ वेद विराट ने, मनु पुत्र को वेद पढ़ाये।
फिर मनु महर्षि ने मरीचि आदि दश पुत्रों को वेद पढ़ाये।
मनु पुत्र स्वायम्भुव ने, राज और समाज के नियम बनाये।
छठी पीढ़ी में इक्ष्वाकु राजा ने, संस्कृत में वेद लिखवाये।
इसी पीढ़ी में विश्वकर्मा नामक, एक पुरुष हुए महान्।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

कला-कौशल में विश्वकर्मा ने, जग में नाम कमाया।
अथर्ववेद उपवेद को पढ़, उसने वायु-यान बनाया।
वायु यान पर बैठा ऋषियों को, नभ में खूब घुमाया।
मंद, सुगंध, शीतलवायु, रमणीय स्थलों का दर्श दिखाया।
बस गये आर्य झट वहीं, देखा जहाँ हरा-भरा सुन्दर स्थान।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

पूर्वकाल में आर्यावर्त में, विद्याओं की थी भरमार।
अस्त्र-शस्त्र विमान विद्या के, ग्रन्थ उपलब्ध थे बेशुमार।
भरे पड़े थे पुस्तकालय, रखे थे ग्रन्थ कई हजार।
यवनों ने दिये जला अधिकतर, उठ रहा था धुआं अपार।
ऋषि दयानन्द ने भी देख उस पुस्तक को, जिससे रचते थे विमान।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

उपरिचर एक राजा था तब, जो हवा में फिरा करता था।
गुब्बारह विद्या में पारंगत था, जिससे हवा में उड़ा करता था।
समुद्री जहाजों का बेड़ा भी तब, व्यापारिक कार्य करता था।
कर लगाकर जहाजों पर, राज कोष तब भरता था।
आश्चर्य है भाई! उस समय दरिद्र भी रखते थे विमान।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

युद्ध विद्या में बहुत कुशल थे, कवायद भी तब करते थे।
धनुर्वेद सिखाते सबको और व्यूह रचना भी करते थे।
सैन्य टोलियां बना-बनाकर, शत्रु पर धावा करते थे।
असि[1], शतघ्नी[2] और भुशुण्डी[3] का, खुलकर सेवन करते थे।
महाभारत के सभापर्व में भी देख सकते हैं अनेक प्रमाण।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।
ऋषि दयानन्द का पूना प्रवचन पढ़, प्राप्त करें यह सब ज्ञान।
पढ़ो इतिहास पुराना.....पढ़ो......।

1. तलवार, 2. तोप, 3. बन्दूक।

होलैण्ड वासी योग सीखने आश्रम आये

उत्कृष्ट विज्ञान के साधनों से आत्म सुख नहीं प्राप्त होता। 'आत्मा वा द्रष्टव्य' के हृदय नाद को जानने की ललक समुद्र पार पहुंचे। होलैण्ड निवासी 8 सितम्बर को वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर रोहतक आये तथा योग की शिक्षा प्राप्त की।

आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में ब्र० अनिल ने प्राणायाम आसन सिखाये। आचार्य जी ने उन्हें शुद्ध आहार, शुद्ध आचरण का उपदेश दिया। शरीर की शुद्धि जल से होती है मन की शुद्धि यम-नियम पर चलने से होती है। वैदिक ऋषि बालक के मन को शुद्ध करते हैं। आचार्य जी ने ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि प्रकृति के जड़ अणु-परमाणुओं द्वारा यह सब संसार बना है। स्वाभाविक हिंसक पशु-पक्षियों में भी योग साधक द्वेष, क्रोध व काम को वश में किया जा सकता है। अधिकार पशु बलिष्ठ शरीर होते हुए यौनाचार नहीं करते। सन्तान हेतु ही कामवृत्ति होती है। मनुष्य भी ऐसा आचरण कर सकता है। आश्रम में 20 से अधिक देशों के पाश्चात्य योग सीखने आ चुके हैं।

—मनोज आर्य Msc. पतञ्जलि योगाश्रम, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।